



DR. UTSAB CHARAN DAS

Dr. Utsab Charan Das is a renowned Odissi dancer, traditional performer of the folk dance named "Chaiti Ghoda Nacha", which is a typical folk dance usually performed by the "Kaivartas" the fishermen community residing in the coastal districts of Odisha. Chaiti Ghoda Nacha is a popular source of entertainment for the rural folk across Odisha.

2. Born on 19th March, 1946, Dr. Das, in his childhood, was deeply fascinated by the soulful melody of Chaiti songs and the throbbing sound of Dhola (drum) and Mahuri (trumpet). While persuing his high school studies, he thought of bringing about innovations in the theme & contents of chaiti songs in order to make them an effective tool for creating public awareness against various superstitions, and evils prevalent in the society. After passing out his Pre-Degree Examination from Christ College, Cuttack, he embarked upon the profession of a full time Chaiti Ghoda Nacha artiste in order to promote and popularise this dance form.

3. Dr. Das has been recognized as a 'B', High Grade folk-artiste by All India Radio, Cuttack Centre and Door Darshan Kendra, Bhubaneswar. He is also an 'A' Grade folk-artist of Song and Drama Division under the Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, New Delhi. He has presented Chaiti Ghoda dance in a number of folk concerts and folk-festivals held under the aegis of Kendra Sangeet Natak Academy, New Delhi; Odisha Sangeet Natak Academy, Bhubaneswar; Deptt. of Culture, Odisha Government; Eastern Zonal Cultural Centre, Kolkata; I.C.C.R, New Delhi and so on. He has participated along with troupe in a number of Republic Day Parades in New Delhi representing the State of Odisha. He has also presented his dance programme on various occasions of National importance like Trade Fair (New Delhi), SAARC Summit, 1986 (Bangalore), Kanchanjunga Festivals (Gangtok), Apna Utstab (Mumbai), different folk dance festivals etc. He formed a troupe of his own named "Sangeet Kala Sansad" and started giving performances of Chaiti Ghoda Nacha in different parts of Odisha on public call.

4. Dr. Das has bagged several awards and honours. Odisha Sangeet Natak Academy has conferred on him the Academy Award for his outstanding contribution to the field of folk dance Chaiti Ghoda Nacha. Indian Metals & Ferro Alloys (IMFA) Public Charitable Trust, Bhubaneswar has honoured him with `Bansidhar-Ila Panda Saraswat Sadhana Award' for his life time achievement as an exponent and preserver of the folk-dance "Chaiti Ghoda". National Aids Control Organisation (NACO), New Delhi has recognized him as a resource person for his contribution in scripting folk songs in Odiya Language for folk performance on HIV and AIDS Prevention & Treatment. Utkal University of Culture, Bhubaneswar has conferred the Degree of Doctor of Literature (honoris Causa) on him for his contribution in the field of creative folk art and dance.

5. Even at the age of 76, Dr. Das is still active in his field and presenting folk dance programmes in various folk-festivals, concerts and exhibitions etc. organized by Govt. Deptts. as well as Private Organisations throughout India. He has continued to amuse the audience with wholesome entertainment at the same time rejuvenating this dying dance-form of Odisha.





डॉ. उत्सव चरण दास

डॉ. उत्सव चरण दास एक ओडिसी के प्रसिद्ध नर्तक और लोक नृत्य "चैती घोड़ा नाच" के पारंपरिक कलाकार हैं। यह विशिष्ट लोक नृत्य ओडिशा के तटीय जिलों में रहने वाले मछुआरा समुदाय "कैवर्त" द्वारा किया जाता है। 'चैती घोड़ा नाच' ओडिशा के ग्रामीण अंचल में मनोरंजन का एक लोकप्रिय साधन है।

2. 19 मार्च, 1946 को जन्मे डॉ. दास को बचपन में चैती गीतों की भावपूर्ण धुन और ढोल और महुरी (तुरही) की थिरकती आवाज मंत्रमुग्ध कर देती थी। अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई को जारी रखते हुए, उन्होंने विभिन्न अंधविश्वासों के खिलाफ जन जागरूकता पैदा करने और समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में प्रभावी माध्यम के रूप में चैती गीतों की विषय–वस्तु में नयापन लाने के बारे में सोचा। क्राइस्ट कॉलेज, कटक से अपनी प्री–डिग्री परीक्षा पास करने के बाद, उन्होंने चैती घोड़ा नाच कला को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए इसे पूर्णकालिक पेशे के रूप में अपना लिया।

3. डॉ. दास को, आकाशवाणी, कटक केंद्र और दूरदर्शन केंद्र, भुवनेश्वर ने "बी" उच्च श्रेणी के लोक–कलाकार के रूप में मान्यता प्रदान की। वह सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत गीत और नाटक प्रभाग के 'ए' ग्रेड लोक–कलाकार भी हैं। उन्होंने नई दिल्ली की केंद्र संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; ओडिशा संगीत नाटक अकादमी, भुवनेश्वर; संस्कृति विभाग, ओडिशा सरकार; पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता, आईसीसीआर, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित कई लोक संगीत समारोहों और लोक–उत्सवों में चैती घोड़ा नृत्य प्रस्तुत किया है। उन्होंने नई दिल्ली में कई गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया और ओडिशा राज्य का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न अवसरों जैसे व्यापार मेला (नई दिल्ली), सार्क सम्मेलन, 1986 (बैंगलोर), कंचनजंगा फेस्टिवल (गंगटोक), अपना उत्सव (मुंबई), विभिन्न राष्ट्रीय नृत्य महोत्सवों आदि में भी अपने नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। उन्होने अपनी नृत्य मंडली "संगीत कला संसद" बनाई और लोगों की मांग पर ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में चैती घोड़ा नाच का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया।

4. डॉ. दास को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। ओडिशा संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें लोक नृत्य चैती घोड़ा नाच के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। इंडियन मेटल्स एंड फेरो अलॉयज (आईएमएफए) पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, भुवनेश्वर ने लोक–नृत्य "चैती घोड़ा" के प्रतिपादक और संरक्षक के रूप में उनकी आजीवन उपलब्धि के लिए उन्हें 'बंसीधर–इला पंडा सारस्वत साधना पुरस्कार' से सम्मानित किया। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एनएसीओ), नई दिल्ली ने एचआईवी और एड्स की रोकथाम और उपचार पर लोक प्रदर्शन के लिए ओडिया भाषा में लोक गीत लेखन में उनके योगदान के लिए, उन्हें 'रिसोर्स पर्सन' के रूप में सम्मानित किया है। उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने रचनात्मक लोक कला और नृत्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए मानद डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि प्रदान की है।

5. 76 वर्ष की आयु में भी डॉ. दास अभी अपने क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा सरकार और निजी संगठनों द्वारा देश भर में आयोजित विभिन्न लोक–उत्सवों, संगीत कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों आदि में लोक नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। वे दर्शकों का पूर्ण मनोरंजन करने के साथ–साथ ओडिशा की विलुप्त हो रही इस नृत्य शैली को फिर से जीवंत करने की दिशा मे लगातार कार्य कर रहे हैं ।